पाठ–6

चित्रकार मोर

– संकलित

संसार में बहुत–से लोग ऐसे होते हैं जो अपनी चिन्ता न करते हुए दूसरों की सहायता करके उन्हें आगे बढ़ाते हैं। ऐसे लोगों को स्वतः ही सम्मान प्राप्त हो जाता है। यही आदर्श इस पाठ के चित्रकार मोर का है जो दूसरों को रंग–बिरंगा बनाने में स्वतः रंग–बिरंगा बन जाता है।

इस पाठ में हम सीखेंगे– सर्वनाम, वचन, लिंग परिवर्तन, **'यदि तो, यदि नहीं तो'** लगाकर प्रश्न करना और उत्तर देना आदि।

बहुत पहले की बात है। तब सारे–के–सारे पक्षी सफेद रंग के होते थे। सारे संसार की रंगीनी देखकर उनका मन भी ललचाता था। वे सोचते थे काश, हम पक्षी भी फूल–पत्ती और रंगीन बादल जैसे रंग–बिरंगे हो जाएँ तो कितना अच्छा हो।

सब पक्षियों ने एक सभा बुलाई और विचार किया। सोचा, चलकर भगवान ब्रह्मा जी से रंग माँगा जाए। सारे पक्षी एकत्र होकर ब्रह्मा जी के पास पहुँचे। ब्रह्मा जी ने पक्षियों की माँग सुनी। उन्हें पक्षियों की माँग सही लगी। बेचारे सब–के–सब पक्षी सफेद हैं। उन्हें रंग मिल जाएँ तो वे भी संसार की रंगीनी में शामिल हो जाएँगे।

आए हुए सब पक्षियों को ब्रह्मा जी ने ध्यान से देखा। उनमें से उन्हें एक पक्षी चुनना था और उसको रंग–रोगन लगाने का अपना यह महत्वपूर्ण काम सौंपना था। आखिर उन्होंने वह पक्षी खोज ही लिया। लंबी पूँछ और ऊँची गरदनवाले पक्षी मोर को उन्होंने अपने इस काम के लिए सर्वथा उपयुक्त समझा।

ब्रह्मा जी ने अपने पास के सब प्रकार के रंग मोर को दे दिए और उसे पक्षियों को रँगने का काम सौंप दिया। मोर अपने भाग्य पर बहुत खुश हुआ। खुश होने के साथ–साथ वह अपने काम के प्रति अत्यंत सजग रहा।

शिक्षण–संकेत– बच्चों के समूह बना दें। अलग–अलग समूह में अलग–अलग अनुच्छेद देकर पढ़कर समझने के लिए समूह से कहें– फिर उनसे उस अनुच्छेद पर चर्चा करें। प्रत्येक समूह को उसी अनुच्छेद से प्रश्न बनाने एवं उनके उत्तर लिखने के लिए कहें।

मोर ने सारे जंगल में ढिंढोरा पिटवा दिया कि सब पक्षी अपनी पसंद का रंग लगवाने के लिए मेरे पास आ जाएँ।

थोड़ी ही देर में सब–के–सब पक्षी मोर के आगे कतार बाँधकर खड़े हो गए।

मोर ने रंगों की पिटारी खोल दी और एक–एक करके पक्षियों को रँगना प्रारंभ किया। जिस पक्षी को जो रंग पसंद था, मोर ने उसे वही रंग लगाया।

तोते ने पहले तो चोंच में लाल रंग लगवाया, फिर सारे शरीर को हरा रँगवा लिया। उसे कच्चे आम का रंग बहुत पसंद था।

नीलकंठ ने अपने गले को नीले रंग में रँगवाया। बतख को अपना सफेद रंग बहुत पसंद था। फिर भी उसने थोड़ा–सा नारंगी रंग अपनी चोंच और पैरों में लगवा लिया।

इसी प्रकार एक–एक करके सारे पक्षी आते–जाते रहे, मोर उनको मनचाहा रंग लगाता गया।

मोर दूसरे पक्षियों को तो रँगता जा रहा था लेकिन उनको रँगने से पहले रंग की परख करने के लिए वह अपने शरीर पर भी थोड़ा–सा रंग लगा लिया करता था।

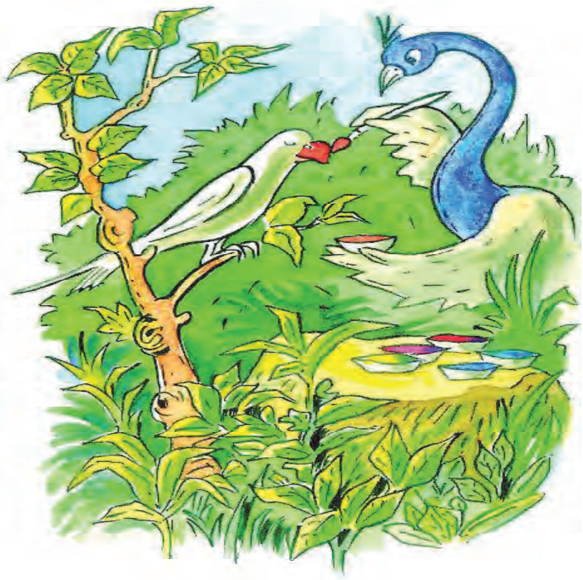

धीरे–धीरे एक–एक करके सब पक्षी अपना शरीर रँगवाकर चले गए। किसी ने थोड़ा–सा रंग लगवाया तो किसी ने बहुत सारा। किसी ने एक रंग तो किसी ने कई रंग लगवाए। जिस पक्षी को जो रंग पसंद आया, उसने वही रंग लगवाया। कुछ पक्षी ऐसे भी थे जिन्हें अपना सफेद रंग ही प्यारा था; इसलिए उन्होंने कहीं पैर में, चोंच में या पीठ में थोड़ा–सा रंग लगवाकर ही संतोष कर लिया।

इधर मोर के पास सारे रंग समाप्त हो चुके थे। रंग समाप्त हो गए हैं, यह देखकर मोर बहुत उदास हो गया। सोचने लगा, ''मैं स्वयं क्या बिना रंग का रह जाऊँगा? दूसरों को रँगने के लिए मैंने इतनी मेहनत की, किंतु स्वयं मेरे अपने लिए कोई रंग नहीं बचा।''

इतने में शान्त, गंभीर और चतुर पक्षी, उल्लू वहाँ आया। मोर को उदास देखकर वह बोला– ''ओ चितेरे! उदास क्यों है? सब पक्षियों को रँग दिया, अब उदासी क्यों भला?''

मोर बोला –'' उल्लू भाई! मैं भी कैसा अभागा हूँ । सबको रंग बाँटता रहा, लेकिन मेरे पास अपने लिए तो कोई रंग ही नहीं बचा।''

मोर की बात सुनकर गंभीर स्वभाववाला उल्लू पहले तो खूब हँसा, फिर बोला, ''जरा अपना शरीर तो देख, अपने पंखों को देख, फिर उदास होना।''

उल्लू की बात सुनकर मोर ने अपने शरीर को देखा तो खुशी से झूम उठा। उसका शरीर तो रंग–बिरंगा, ढेर सारे रंगों की फुलवारी बन गया था।

उसे ध्यान आया – ''दूसरे पक्षियों को रँगने से पहले, परखने के लिए, मैं रंग अपने शरीर पर ही तो लगा रहा था। बस, वे सारे रंग मेरे अपने हो गए।''

वह बहुत खुश हुआ। अभी वह अपनी खुशी पूरी तरह से प्रकट भी नहीं कर पाया था कि आसमान पर काले–काले बादल छा गए। देखते–ही–देखते वर्षा होने लगी।

सारे पक्षी अपना रंग बचाने के लिए वृक्षों, लताओं, घोंसलों में जा छिपे। बेचारा मोर इतना भारी–भरकम शरीर लेकर कहाँ जाता? उसे लगा कि अब तो पानी की बूँदें उसके सारे रंग धो डालेंगी और वह पहले जैसा बेरंग और श्वेत हो जाएगा। किन्तु ब्रह्मा जी ने जो रंग दिए थे, वे क्या इतने कच्चे थे कि वर्षा के पानी से धुल जाते? वे तो पक्के हो चुके थे।

मोर ने देखा पानी की बूँदों का तो उसके शरीर पर, उसके रंगीन पंखों पर कोई असर ही नहीं हो रहा था। बस, फिर क्या था ? खुशी के मारे उसने सारे पंख फैला लिए और वह नाचने लगा।

तब से लेकर आज तक मोर जब भी बादलों को देखता है, तब अपने शरीर के सुंदर रंगों को देखकर पंख फैलाकर नाचने लगता है।

शब्दार्थ

नीचे कोष्ठक में भी कुछ शब्दों के अर्थ लिखे हैं। इन्हें सही शब्द के सामने छाँटकर लिखो।

(बिना रंग के, सफेद या धवल, चित्रकार, ढक्कनवाली टोकरी)

एकत्र	–	इकट्ठा	अभागा	–	बुरे भाग्यवाला
रुआँसा	–	रोने के समान	श्वेत	–	....
बेरंग	–	....	चितेरे	–	....
पिटारी	–	....			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. सारे संसार को रंगीन देखकर पक्षी क्या सोचते थे?

प्रश्न 2. पक्षियों ने रंग पाने के लिए क्या प्रयास किया?

प्रश्न 3. मोर रंग–बिरंगा कैसे हो गया?

प्रश्न 4. ब्रह्मा जी ने रंग–रोगन के लिए मोर को ही क्यों चुना?

प्रश्न 5. मोर की बात सुनकर उल्लू क्यों हँस पड़ा था?

प्रश्न 6. मोर के शरीर पर लगा रंग वर्षा के पानी से धुल जाता तो क्या होता?

प्रश्न 7. मोर अन्य पक्षियों को रंग लगाते समय अपने शरीर पर रंग लगाकर न देखता तो क्या होता?

प्रश्न 8. पर्यावरण संरक्षण में पक्षियों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है ? इस तथ्य पर पुष्टि हेतु अपने तर्क दें।

भाषातत्व और व्याकरण

गतिविधि

प्रश्न 1. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो–

अ. मन ललचाना ब. ढिंढोरा पिटवाना स. खुशी से झूम उठना

प्रश्न 2. कुछ शब्दों का प्रयोग कभी–कभी दो बार भी होता है, जैसे– क्या–क्या, साथ–साथ, कौन–कौन, एक–एक, कब–कब, काले–काले आदि।

इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

समझो

- एक ही शब्द के एक से ज्यादा अर्थ हो सकते हैं। नीचे लिखे उदाहरण पढ़ो और समझो।

धरा– क. वर्षा ऋतु में <u>धरा</u> हरी–भरी हो जाती है।

ख. नाटक दिखाने के लिए मोहन ने अजीब रूप <u>धरा</u>।

प्रश्न 3. इसी प्रकार 'बेर' का दो अर्थों में प्रयोग करो।

- कभी–कभी निषेधवाचक वाक्य को 'क्या' का प्रयोग करके भी प्रकट किया जाता है, जैसे–

वे क्या इतने कच्चे थे कि वर्षा के भय से धुल जाते?

प्रश्न 4. अब 'क्या' शब्द का ऐसे ही अर्थ में प्रयोग करो।

- इन वाक्यों को पढ़ो–

  क. बच्चा <u>हँस</u> रहा है।

  ख. <u>हँसना</u> बच्चे के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

  पहले वाक्य में 'हँसना' क्रिया के रूप में प्रयोग हुआ है और दूसरे वाक्य में यह संज्ञा है।

प्रश्न 5. 'खेलना' शब्द को दोनों रूपों में अलग–अलग वाक्यों में प्रयोग करो।

रचना

- मोर का एक बड़ा चित्र बनाकर उसमें चमकीले रंग भरो और कक्षा की दीवार पर लगाओ।
- अपने मित्र/सहेली को एक पत्र लिखकर अपने क्षेत्र में पाए जाने वाले किसी एक पक्षी के संबंध में जानकारी दो जिसमें उसके आवास, भोजन, रंग–रूप और बोली आदि का विवरण हो।

योग्यता–विस्तार

- तुम्हारे आसपास रहने वाले पक्षियों की जानकारी प्राप्त कर निम्न तालिका में भरो –

पक्षियों के नाम		रंग	कहाँ रहते है
स्थानीय	वैज्ञानिक		

5ANBXL